थनैला

एक नही !!!!कई कारक है

यह रोग विभिन्न प्रकार के संक्रामक जीवाणु, विषाणु और कवको द्वारा होता है।
जिनमें प्रमुख है स्ट्रेप्टोकोकस, स्टाफीलोकोकस, ई.कोलाई, एसपरजिलस, कैंडिडा, क्रिप्टोकोकस और माइकोप्लाज्मा

थनैला होने के प्रमुख कारण

- थनो और निप्पलों पर चोट का लगाना
- उच्च दुग्ध उत्पादन
- पशु बेड़े के फर्श की मैली स्थिति
- अधुरा या अनियमित दुहान करना
- अनुचित दुहान तकनीकी
- लटकता हुआ थन और लंबे बेलनाकार निपल
- गंदे मिल्किंग मशीन का उपयोग

लक्षण

- ज्वर का आना
- दूध का पीला, भूरा या लाल होना
- थन में गर्म और दर्दनाक सूजन
- दूध में थक्को का दिखाई देना
- ऐसे दूध गर्म करने पर फट जाते है
- पुराने रोगो में थनों की फाइब्रोसिस होना
- जिसमे से मुश्किल से दूध निकलता है।

थनैला के प्रकार

सबक्लिनीकल थनैला

क्लीनिकल थनैला

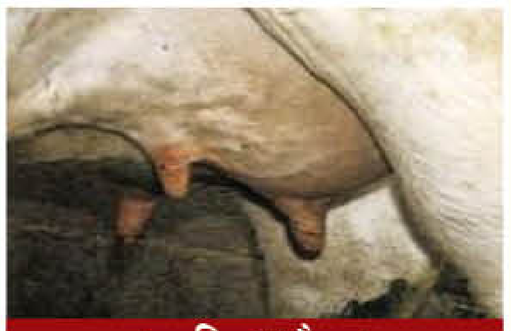
क्रानिक थनैला

आसान है निदान

मवाज़ युक्त पका हुआ निप्पल

कैलिफोर्निया मैस्टाइटीस परीक्षण

दूध में खून और मवाज़ का आना

दूध में थक्को का आना

पीएच टेस्ट से, थनैला का दूध क्षारीय होता है

थनैला से अपने पशुओं को कैसे बचाए?

दूध दुहने से पहले थानों की अच्छे तरह से सफाई करें

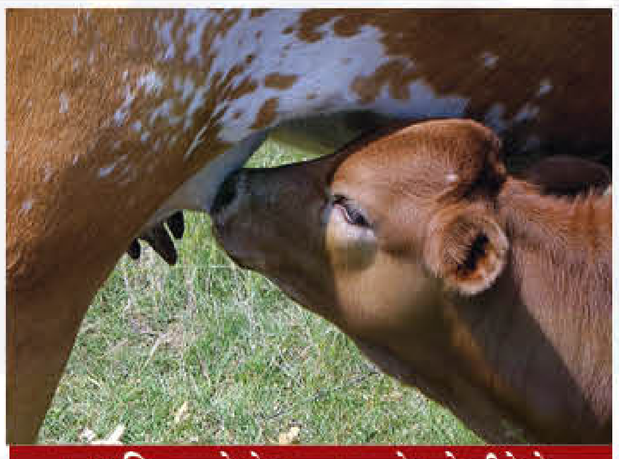
दूध निकालने के बाद बछड़े को पीने दे

दूध दुहने बाद निप्पलों को जीवाणुनाशक घोल जैसे लाल दवा मे डुबाये

मिल्किंग मशीन को पूरी तरह से साफ रखे

ध्यान दे

थनैला से पीड़ित पशु के दूध मे हानिकारक जीवाणु होते है
ऐसे दूध को पीने से मनुष्य में तपेदिक, गले में खरास, एव
विषाक्त भोजन की बीमारियों भी हो सकती है।
अगर थनो के अंदर दवा लगी हो तो ऐसे पशुओं का दूध 72
घंटे तक उपभोग नहीं करना चाहिए

नियंत्रण

- प्रभावित पशुओं को अलग करके इनका इलाज करना चाहिए
- दुहने से पहले साबुन से हाथो को अच्छी तरह से धोना चाहिए
- दूध दुहने के बाद एंटीसेप्टिक जैसे लाल दवा में निपलो को डुबना चाहिए
- दुहान शेड के फर्श को साफ रखना चाहिए
- मक्खियो के नियंत्रण का उपाय करना चाहिए

फोटो स्रोत : इन्टरनेट

भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक
फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in